



मूंगफली का बीज उत्पादन

जोगेन्द्र सिंह* और रेखा चौधरी**

॥ मूंगफली (ऐराकिस हायपोजिया) एक प्रमुख तिलहनी फसल है। यह वनस्पति प्रोटीन का एक सस्ता स्रोत है। इसमें प्रोटीन की मात्रा मांस की तुलना में 1.5 गुना, अंडों से 2.5 गुना एवं फलों से 8 गुना अधिक होती है। इसमें 50 प्रतिशत वसा होता है। प्रकृति ने इसे भरपूर मात्रा में विभिन्न पोषक तत्वों से सजाया-संवारा है। यह पाचन शक्ति बढ़ाने में भी कारगर है। ॥

विश्व में चीन के बाद भारत, मूंगफली का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है और प्रतिवर्ष लगभग 10.21 मिलियन टन का उत्पादन करता है। देश में मुख्यतः गुजरात, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, तेलंगाना तथा महाराष्ट्र में इसकी खेती की जाती है। इनका मूंगफली उत्पादन में लगभग 90 प्रतिशत से भी अधिक का योगदान है। राजस्थान में मूंगफली 7.39 लाख हैक्टर में बोयी जाती है और यहां प्रतिवर्ष लगभग 16.19 लाख टन मूंगफली का उत्पादन होता है। राज्य में मुख्य रूप से बीकानेर, जोधपुर, चुरु, जैसलमेर, जयपुर, सीकर, चित्तौड़गढ़ और जालौर जिलों में इसकी खेती की जाती है।

महत्व

मूंगफली में प्रोटीन प्रचुर मात्रा में होता है। इसे भारत में गरीबों का बादाम भी कहा जाता है। यह देश में वनस्पति तेल की कमी को पूरा करने में एक अहम भूमिका निभाती

*सहायक आचार्य, पादप प्रजनन एवं आनुवंशिकी विभाग, कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर (राजस्थान); **सहायक आचार्य, पादप प्रजनन एवं आनुवंशिकी विभाग, दयानंद महाविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)

है। इसके दानों में 48-50 प्रतिशत तेल तथा 28-30 प्रतिशत प्रोटीन होता है। इसके अलावा इसमें खनिज पदार्थ (जैसे-पोटेशियम, सोडियम, कैल्शियम, मैग्नीज, जिंक तथा आयरन) तथा विटामिन 'के', 'ई' और बी₆ भी भरपूर मात्रा में उपलब्ध होते हैं।

मृदा चयन

बीजोत्पादन के लिए ऐसी मृदा का चयन करें, जिसमें पिछले दो वर्षों से मूंगफली की किसी किस्म की खेती नहीं की गई हो।

पृथक्करण दूरी

खेत के चारों तरफ 3 मीटर की दूरी पर मूंगफली की फसल नहीं बोई जानी चाहिए।



नवीन किस्म आर.जी. 559-3 का प्रजनक बीज उत्पादन

खेती • फरवरी 2024 • 19

फसल संरक्षण

व्याधि प्रबंधन

जड़ गलन रोग: इसके प्रभावी रोकथाम के लिए कार्बोक्सिन 37.5 प्रतिशत एवं थीरम 37.5 प्रतिशत (बीटावेक्स पावर) का 3 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करना चाहिए।

विषाणु गुच्छा रोग: रोग ग्रसित क्षेत्र में बाजरे की बुआई 100 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से करें व 15 दिनों बाद बाजरे को पलटकर मूंगफली की बुआई करें। इसके अलावा, बुआई के समय ब्लाइटॉक्स 50 प्रतिशत डस्ट को 10 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से डालने पर रोग कम लगता है।

कीट प्रबंधन

सफेद लट: खड़ी फसल में सफेद लट का नियंत्रण भी आवश्यक है। इसके लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 300 मिली लीटर या क्यूनालोफॉस 25 ई.सी. 4 लीटर प्रति हैक्टर की दर से सूखी बजरी या मिट्टी में मिलाकर पौधों की जड़ों के पास डालकर हल्की सिंचाई कर दें।

दीमक: खड़ी फसल में इसका प्रकोप दिखाई देने पर क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. 4 लीटर प्रति हैक्टर की दर से सिंचाई के पानी के साथ दें।

बुआई का समय एवं बीज दर

बुआई का उपयुक्त समय जून का प्रथम पखवाड़ा है। मध्यम गुली वाली झुमका किस्मों का 100 कि.ग्रा. तथा फैलने व अर्द्धविस्तारी किस्मों का 80 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टर पर्याप्त होता है। पंक्ति से पंक्ति की दूरी झुमका किस्मों के लिए 30 सें.मी. तथा फैलने व अर्द्धविस्तारी किस्मों के लिए 45 सें.मी. और पौधे से पौधे की दूरी 10 सें.मी. रखनी चाहिए। उभरी क्यारियां बनाकर बुआई करने पर बीज की उपज एवं गुणवत्ता में वृद्धि होती है।



मूंगफली का प्रमाणित बीजोत्पादन

बीज स्रोत

बीजोत्पादन हेतु बीज को प्रमाणित स्रोत यथा कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि अनुसंधान केन्द्रों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, राष्ट्रीय बीज निगम व राज्य बीज निगम से ही क्रय करें। इसकी प्रमाणीकरण प्रक्रिया हेतु बीज का बिल, बैग व टैग/लेबल संभालकर रखें। आधार बीज और प्रमाणित बीज तैयार करने के लिए बुआई हेतु क्रमशः प्रजनक बीज और आधार बीज की आवश्यकता होती है।

बीजोपचार

कॉलर रॉट रोग से बचाव के लिए बुआई से पहले कार्बोक्सिन 37.5 प्रतिशत एवं थीरम 37.5 प्रतिशत (वीटावेक्स पॉवर) 3 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से बीजों को उपचारित करें। सफेद लट की रोकथाम के लिए बीजों को 6.5 मि.ली. इमिडाक्लोप्रिड 600 एफ.एस. प्रति कि.ग्रा. की दर से उपचारित करके बोयें।

उर्वरक प्रबंधन

मूंगफली के खेत में प्रति हैक्टर की दर से 15 कि.ग्रा. नाइट्रोजन तथा 60

सारणी 1. राजस्थान के लिए उपयुक्त उन्नत किस्में

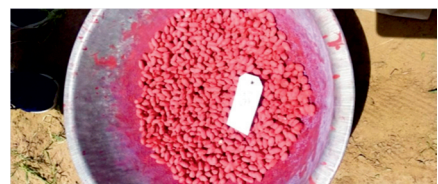
अधिसूचना वर्ष अनुसार समयावधि	उपयुक्त किस्में
10 वर्ष से पुरानी अधिसूचित किस्में	एच.एन.जी.-10, टी.जी. 37-ए, आर.जी. 382, प्रताप मूंगफली-1, प्रताप मूंगफली-2, गिरनार-2, मल्लिका, एच.एन.जी.-69, आर.जी.-425, एच.एन. जी.-123, आर.जी.-510
10 वर्ष तक नवीन अधिसूचित किस्में (कृषि विभाग द्वारा बीजोत्पादन हेतु अनुदान देय)	आर.जी.-578 (2015), आर.जी. 559-3 (2016), आर.जी.-638 (2023)

सारणी 2. बीज के मानक

कारक	आधार बीज के मानक	प्रमाणित बीज के मानक
शुद्ध बीज (न्यूनतम)	96 प्रतिशत	96 प्रतिशत
निष्क्रिय पदार्थ (अधिकतम)	4 प्रतिशत	4 प्रतिशत
अन्य फसलों के बीज (अधिकतम)	कोई नहीं	कोई नहीं
खरपतवारों के बीज (अधिकतम)	कोई नहीं	कोई नहीं
अंकुरण (न्यूनतम)	70 प्रतिशत	70 प्रतिशत
नमी की मात्रा (अधिकतम)	9 प्रतिशत	9 प्रतिशत

कि.ग्रा. फॉस्फोरस का बुआई के समय प्रयोग करें। सिंचित क्षेत्रों में छोटे व मध्यम दाने वाली किस्मों के लिए 250 कि.ग्रा. तथा मोटे दाने वाली किस्मों के लिए 400 कि.ग्रा. जिप्सम प्रति हैक्टर की दर से (तीन वर्ष में एक बार) बुआई से एक-दो सप्ताह पूर्व भूमि में मिलाकर सिंचाई करें।

बीज उत्पादन हेतु उपरोक्त के अतिरिक्त बुआई पूर्व 7.5 टन सड़ी हुई गोबर की खाद, 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट (जिंक की कमी वाली मृदाओं में) तथा 25 कि.ग्रा. फेरस सल्फेट प्रति हैक्टर की दर से मिट्टी में मिला दें। इसके बाद 30 एवं 60 दिनों की फसलावस्था पर 2 प्रतिशत यूरिया



बीजोपचार

का फसल पर छिड़काव करने से अधिक व गुणवत्तापूर्ण बीज प्राप्त होते हैं।

फसल की खुदाई व सुखाना

मूंगफली की पत्तियां, जब पीली पड़ने लगें, तो शाम को सिंचाई करें। अगली सुबह हाथ या ग्राउण्ड नट डिगर द्वारा पौधों को जड़ों से उखाड़कर छोटी-छोटी ढेरियों में खुली धूप में रख दें। इसके 7-10 दिनों बाद फलियां अच्छी तरह सूख जाएं, तो इन्हें तोड़कर अलग कर लें।

बीज की उपज

मूंगफली की पैदावार किस्मानुसार असिंचित क्षेत्रों में 20-25 क्विंटल तथा सिंचित क्षेत्रों में 30-40 क्विंटल प्रति हैक्टर तक हो जाती है।

भण्डारण

बीजोत्पादन हेतु फलियों को 8-10 प्रतिशत नमी की मात्रा तक अच्छी तरह सुखाकर ही भण्डारण करना चाहिए। अन्यथा नमी की वजह से बीजों में एस्पेरजिलस नामक फफूंद लगकर एक विषैला पदार्थ एफ्लाटोक्सिन बना देती है। इससे मूंगफली खाने योग्य नहीं रहती है और बीज की अंकुरण क्षमता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। मूंगफली का भण्डारण पॉलीलाइंड गनी बैग्स में करना अधिक उपयुक्त रहता है।

खरपतवार प्रबंधन

फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए पेंडीमेथिलीन 30 ई.सी. व इमेजाथापायर 2 ई.सी. (रेडीमिक्स) 100 ग्राम सक्रिय तत्व को बुआई के तुरन्त बाद छिड़काव करें। इसके अतिरिक्त बीजोत्पादन हेतु 30-35 दिनों की फसलावस्था में एक बार निराई-गुड़ाई करके पौधों की जड़ों पर मिट्टी चढ़ायें।

रोगिंग

बीजोत्पादन हेतु फसल में से अवांछनीय, अन्य फसल/किस्म, रोगग्रस्त व खरपतवार के पौधों को फूल आने से पूर्व ही निकाल देना चाहिए। ये पौधे बीज की गुणवत्ता को खराब कर सकते हैं। रोगिंग की प्रक्रिया फसलावधि में कम से कम 3-4 बार अवश्य करनी चाहिए। अन्तिम निरीक्षण के समय, बीज फसल में अवांछनीय पौधे 0.10 प्रतिशत (आधार बीज) एवं 0.20 प्रतिशत (प्रमाणित बीज) से अधिक नहीं होने चाहिए अन्यथा बीज फसल को अमानक घोषित कर दिया जाता है। इसके अतिरिक्त खुदाई से पूर्व व खुदाई के दौरान भी पौधे व फलियों के रंग व आकार आदि के आधार पर भिन्न व अवांछनीय पौधों को भी अलग करना आवश्यक होता है।

सिंचाई

फसल की आवश्यकतानुसार 10-15 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करें तथा जहां दो ही सिंचाई उपलब्ध हों, वहां पर इसे फूल आने और दाना बनते समय करें।